ISSN : 2249-930X
(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

हिंदी अनुशीलन

त्रैमासिक

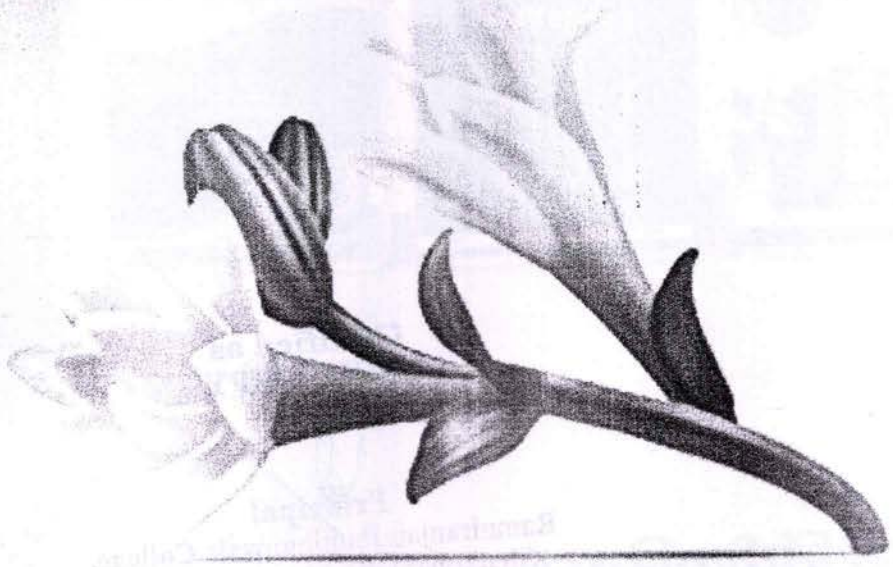

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

वर्ष 62 दिसम्बर 2020 अंक 4

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

अनुक्रम

1. विमर्श 7
प्रोफेसर नन्द किशोर पाण्डेय

2. संवाद 11
प्रोफेसर नरेन्द्र मिश्र

3. निराला का अद्वैत दर्शन 23
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

4. रीतिकाल के रामपरक प्रबंध काव्य 28
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल

5. आधुनिक जनमाध्यमों की प्रकृति और भाषा में नवाचार : ई-लेखन 36
डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

6. द्रौपदी का लोकमंगलकारी चरित्र और भारतीय दृष्टि 43
डॉ. श्रीमती वंदना कुमारी

7. आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों की राष्ट्रीय काव्यधारा 48
डॉ. अनीता गुप्ता

8. छठी दलाई लामा की कविताओं में अध्यात्म का स्वरूप 60
डॉ. जोराम यालाम नाबाम

9. संत भक्त कवि तुलसी 66
प्रो. उमा मिश्र

10. राष्ट्रीय चेतना का स्वर एवं संघ-गीत 72
विपिन बिहारी पाठक, डॉ. पूजा धमिजा

11. नवीन उजास की ओर बढ़ता कदम : कामायनी और वर्तमान संदर्भ 77
डॉ. रेनू त्रिपाठी

12. भक्तिकाव्य का नवोन्मेष 83
(डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल' की काव्यकला के संदर्भ में)
डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र

13. दिखा गई पथ : कहानीकार सुभद्राजी 90
डॉ. अचला पाण्डेय

14. प्रसाद : अंतर्विरोधों के समन्वयक 98
डॉ. विनिता चौहान

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai

30. भारतीय संस्कृति के महान सृजक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 185
डॉ. पल्लवी
31. स्त्री विमर्श : समसामयिक चिंतन 189
डॉ. सविता
32. हिन्दी सिनेमा और साहित्य : 'परम्परा की खोज' 193
डॉ. जोतिमय बाग
33. आधुनिक हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा 196
डॉ. शोभारानी
34. स्त्री विमर्श और कमल कुमार का कथा-साहित्य 200
डॉ. शशिकांत मिश्र
35. सामाजिक समरसता में भारतीय संतों का योगदान 210
डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
36. समकालीन हिंदी कविता में बाल-विमर्श 217
डॉ. मिथिलेश शर्मा

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

एक नया 'इनविजिबल मैन'
अस्थिर बेचैन!
पर मुझको देह चाहिए-
दो मुझको, फिर जन्म दे दो-
इस बार एक नई धरती पर
जो इससे ज्यादा हरी हो, मुलायम भी
अंत में कहता है–
अनंत का हिज्जे क्या है, माँ?
'न' आधा होगा 'न' के बाद
या लगेगी उस पर बिन्दी?
देखो, मैं भूल रहा हूँ हिन्दी
तीन बरस माथा पच्ची की
सिर्फ विज्ञान गणित में।
बीज गणित में, काश, एक बीज होता फूलों का भी,
रेखागणित की रेखाएँ
चित्रकला की रेखाओं-सी
आकी-बांकी होकर
गिल्ली-डंडा खेलती।"[1]

आज एक तरफ अमीर माँ-बाप जहाँ बच्चों को उनकी पसंद की वस्तुएँ दिलाकर खुश करना चाहते हैं। जिसका चित्रण उषा यादव की कविता में हुआ है–

"यह भी लोगे, वह भी लोगे,
दुकानें तो खुली हुई हैं।
बोलो मुन्ने क्या-क्या लोगे?"[2]

वहीं दूसरी तरफ गरीबी की मार से पीड़ित गरीब माँ-बाप का बच्चा जो कि मात्र आठ साल का है, दिल्ली जाने को तैयार है। वहाँ क्या करेगा, कहाँ रहेगा, क्या खाएगा इससे कोई मतलब नहीं। मतलब तो सिर्फ इससे है कि बेटा कितना भेजेगा? जरुरतों ने कलेजे के टुकड़ों को ए टी एम मशीन बना कर रख दिया है। देखिए ये पंक्तियाँ–

"बस मनी आर्डर करना जाते ही,
दुनिया उठाएगा, पीठ पर।" (इब्बार रब्बी)[3]

इतना ही नहीं इस संसार में अनेकों बच्चे ऐसे भी हैं जो पढ़ना चाहते हैं पर पढ़ने की उम्र में उनके माँ-बाप उनसे दुनिया का भारी बोझ उठवाते हैं। दमित बचपन का सच यही है जिसका मर्मस्पर्शी चित्रण चंद्रभान ने अपनी कविता में किया है–

"न तो कभी
नींद को मीठी झिड़की देता समीर

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

उनकी झुकी पीठ की रीढ़ से
कभी-कभी कहती हैं
"कैसे हो? कैसा है मंडी का हाल ?"
बढ़ते-बढ़ते
चले जाते हैं वे
पाताल तक
और वहाँ लग्गी लगाकर
बैंगन तोड़ा करने वाले
बौनों के वास्ते
बना देते हैं
माचिस के खाली डिब्बों के
छोटे-छोटे डिब्बों के कई घर।"[6]

इस प्रकार की कविताएँ हैं जिनमें बचपन के दर्द को कवियों ने महसूस किया है। इसी क्रम में मंगलेश डबराल की कविता- "घर का रास्ता", चंद्रकांत देवताले की कविता- "लकड़बग्घा हंस रहा है" आदि उल्लेखनीय हैं।

बोधिसत्व ने अपनी नजर उन बच्चों पर भी डाली है जो जूते पॉलिश करते हैं और ऐसे बच्चों को वे जोगी के रुप में देखते हैं। फर्क इतना है कि जोगी कोई स्वेच्छा से बन भी सकता है पर जूते चमकाने वाला नहीं। जोगी बनना स्वयं की इच्छा पर निर्भर करता है, जबकि जूता पॉलिश करना बच्चे की विवशता है। "हम जो नदियों का संगम हैं" कविता में बोधिसत्व कहते हैं-

"जो जूतों की तलाश में, घूमते हैं ब्रश लेकर
और मिलते ही बिना देर लगाए
ब्रश को गज की तरह चलाने लगते हैं,
जूतों पर, गोया जूते उनकी सारंगी हो,
यश और मोक्ष नहीं,
निस्तेज जूतों की तलाश करते रहते हैं वे।"[7]

आज हमारे सामने ऐसे अनेक प्रश्न हैं जो हमें झकझोरते हैं। ये फूल से बच्चे पढ़ने और खेलने की उम्र में पोस्टर बनाने से लेकर घरों में बर्तन माँजना और जूते तक साफ कर रहे हैं। क्या देश, समाज और व्यक्ति तीनों के सामने ये जटिल समस्या नहीं है? घर में खटते बच्चों का हाल परवीन शाकिर जी अपनी कविता "एक मुश्किल सवाल" में बहुत ही तीखे स्वर में उठाती हैं–

"टाट के पर्दे के पिछे से
एक बारह-तेरह साल का चेहरा झांका
वह चेहरा
बहार के पहले फूल की तरह ताज़ा था
और आंखे

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

बाल मजदूरी के रुप में चिह्नित की गई है। जिस देश में आज भी कई लाख बच्चे भूखे सो जा रहे हों, लाखों बच्चें छह महीनों के भीतर प्राण त्याग दे रहे हों, लाखों बच्चे आज भी भीख माँग कर अपना भरण पोषण करने के लिए अभिशप्त हों। ऐसे में बाल शिक्षा और बाल मजदूरी जैसी समस्याओं से निजात पाना आसमान में सुराख करने जैसा ही होगा। सरकार, एन. जी. ओ. के साथ आम आदमी भी यदि इस दिशा में कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करे तो नामुमकिन कुछ भी नहीं है।

संदर्भ सूची

1. दूब धान - अनामिका (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. इक्यावन बाल कविताएं - उषा यादव (आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 2004)
3. लोगबाग - इब्बार रब्बी (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985)
4. आज की कविता - विनय विश्वास (राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 2000)
5. आज की कविता - विनय विश्वास (राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 2000)
6. अनुष्टुप - अनामिका (किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998)
7. हम जो नदियों का संगम हैं - बोधिसत्व (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000)
8. एक मुश्किल सवाल - परवीन शाकिर (संपादित पुस्तक)
   (थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे - सं. डॉ. विनोदानंद झा, बिहार बाल भवन, पटना 2012)
9. नेपथ्य में हंसी - राजेश जोशी (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004)

विभागाध्यक्ष हिंदी
रामनिरंजन झुनझुनवाला कालेज
घाटकोपर पश्चिम, मुम्बई-400086
Email : smithilesh68@gmail.com

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.